B.Ed. (IIIrd Semester)

Group B Civics Teaching

Topic : Aims and Objectives Of Civics Teaching at the School Level

Dr. Kanak Lata Vishwakarma
Associate Professor,
Harishchandra P.G. College,
Varanasi

Aims of Civics Teaching

- शिक्षण से पूर्व शिक्षक अपने लक्ष्य का निर्धारण करता है और इन लक्ष्यों को अधिगम व्यवहार (**Learning Behaviour**) के रूप में प्रतिपादित करने से शिक्षण क्रिया की कुशलता में वृद्धि होती है। शिक्षा के लक्ष्य समाज की मांगो, आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुकूल हो, इसी तथ्य को ध्यान में रखकर विभिन्न देशों के विभिन्न विचारकों ने विभिन्न कालों में शिक्षा के विभिन्न लक्ष्यों का निर्धारण किया। वर्तमान समय में शैक्षिक लक्ष्यों का निर्माण बालकों के आवश्यकताओं, रूचियों, क्षमताओं को ध्यान में रखकर किया जाने लगा। प्रत्येक समाज यह निर्धारित करता है कि ''क्या प्राप्त किया जाना चाहिए''। शिक्षक यह निर्धारित करता है कि ''क्या प्राप्त किया जा सकता है।'' और इन सबसे निकला परिणाम शैक्षिक लक्ष्य होता है।

Concept of Objectives

- शिक्षा में उद्देश्यों का क्या कार्य है यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। वास्तव में उद्देश्यों के जो कार्य सामान्य क्षेत्रों में होते हैं वहीं कार्य शिक्षा के उद्देश्यों के द्वारा भी सम्पादित किये जाते हैं। उद्देश्य हमें केवल रास्ता ही नहीं बताते बल्कि लक्ष्य तक भी पहुँचाते हैं। नागरिक शास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों का विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग ढंग से उल्लेख किया **Bining & Bining** लिखते हैं कि ''नागरिक शास्त्र शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य अच्छे नागरिक बनाना है तथा छात्रों का इस प्रकार सहायता करना है जिससे अच्छे नागरिक चरित्र का विकास हो।''

Difference Between Aims & Objectives

Aims	Objectives
1. लक्ष्य शिक्षा को निर्धारित दिशाएं प्रदान करते हैं। शिक्षा इनके अभाव में सही दिशा में प्रगति नहीं कर सकता।	1. उद्देश्य वह बिन्दु है जो निर्धारित दिशा में सम्भव उपलब्धि को व्यक्त करता है।
2. लक्ष्य की प्राप्ति विद्यालय कार्यक्रम के क्षेत्र से बाहर भी है।	2. उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।
3. शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति निश्चित नहीं होती।	3. उद्देश्य लक्ष्यों से विकसित व उत्पन्न होते हैं।
4. लक्ष्य कक्षा–कक्ष शिक्षण की रणनीतियों के निर्धारण में सहायक नहीं होते।	4. उद्देश्य कक्षा–कक्ष की शिक्षण की रणनीतियों के निर्धारण में सहायक होते हैं।
5. लक्ष्य एक सामान्य कथन है।	5. उद्देश्य एक विशिष्ट एवं निश्चित कथन है।

Objectives of Civics Teaching

- **Bloom** ने शैक्षिक उद्देश्यों का जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया है वह मौलिक रूप से शैक्षिक, तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक पद्धति का मिश्रण है। शैक्षिक उद्देश्यों का प्रतिपादन करना प्रत्येक शैक्षिक व्यवस्था के लिए आवश्यक माना जाता है। ये उद्देश्य : सामान्य, विशिष्ट एवं व्यवहारपरक ढंग से विकसित किये जा सकते हैं।

- **General Objectives** (सामान्य उद्देश्य)– किसी भी विषय के शिक्षण हेतु उसकी प्रकृति एवं सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए कुछ लक्ष्य निर्मित किये जाते हैं इन्हें ही सामान्य उद्देश्य कहा जाता है।
- **Specific Objectives**(विशिष्ट उद्देश्य)– विषय से सम्बन्ध रखने वाले उद्देश्यों को विशिष्ट उद्देश्य कहते हैं। विषय सम्बन्धी सामान्य उद्देश्य निश्चित होते हैं और पाठ के उद्देश्य बदलते रहते हैं।
- **Behavioural Objectives** (व्यवहारपरक उद्देश्य)– प्रत्येक शिक्षण का उद्देश्य होता है कि छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन किया जाये। इन्हीं व्यवहार के परिवर्तनों को दर्शाने वाले उद्देश्य को व्यवहारपरक उद्देश्य कहते हैं।

Example – छात्रों को नागरिकता के बारे में बताना सामान्य उद्देश्य है। छात्र पढ़ने के बाद अच्छे नागरिकता के पाँच गुणों को बता सकेंगे। यह व्यवहारपरक उद्देश्य है।

- **Writing Teaching Objectives**– शिक्षण उद्देश्यों को अधिगम व्यवहार के तीन अनुक्षेत्रों **(Domins)** में बांट कर विश्लेषण किया जाता है। ये क्षेत्र हैं :– संज्ञानात्मक **(Cognitive),** भावात्मक **(Affective)** तथा क्रियात्मक **(Psychomotor).**

- संज्ञानात्मक अनुक्षेत्र के उद्देश्य **(Objectives of Cognitive Domin) :**

संज्ञानात्मक अनुक्षेत्र के उद्देश्य बौद्धिक क्षमताओं तथा मानसिक गुणों से सम्बन्धित होते हैं। इसके अन्तर्गत शिक्षण उद्देश्यों को छः वर्गों में रखा जाता है।

- 1. ज्ञान **(Knowledge) :** इसमें तथ्यों, पदों, प्रक्रियाओं आदि को बिना किसी हेर–फेर के स्मरण कराना मुख्य कार्य होता है।
- 2. अवबोध **(Comprehension) :** इसमें प्रमुख मानसिक क्रिया सीखे हुए एक पद या तथ्य का दूसरे पद या तथ्य से सम्बन्ध जोड़ने के रूप में सम्पन्न होती है। इसके मुख्य रूप हैं **Translation** कर लेना, **Interpretation** कर सकना और **Extrapolation** कर पाना।
- 3. अनुप्रयोग **(Application) :** जिसमें सीखे हुए ज्ञान तथा अवबोध को अधिगमकर्ता नवीन परिस्थितियों में लागू कर लेता है।
- 4. विश्लेषण **(Analysis) :** जिसमें किसी विषयवस्तु को अलग–अलग घटकों में विभक्त किया जाता है।
- 5. संश्लेषण **(Synphesis) :** जिसमें तथ्यों को जोड़कर एक नवीन संरचना के रूप में गठित किया जाता है।
- 6. मूल्यांकन **(Evaluation) :** जिसमें आन्तरिक साक्षियों एवं बाह्य कसौटियों के अनुसार कुछ विशेष मुद्दों पर निर्णय लिये जाते हैं और उनकी अर्हता या मूल्य का पता लगाया जाता है।

भावात्मक अनुक्षेत्र के उद्देश्य (Objectives in Affective Domain) :

- भावात्मक अनुक्षेत्र के उद्देश्य व्यक्ति के रूचियों, आकर्षण तथा रागात्मक सम्बन्धों से जुड़े होते हैं। इसके अन्तर्गत शिक्षण उद्देश्यों को पाँच वर्गों में बांटा जाता है :–

1. ग्रहण **(Receiving) :** जिसके अन्तर्गत ध्यान देना, तत्परता एवं नियंत्रित एवं चयनात्मक अवधान **(Selective Attention)** की क्रियायें प्रकट होती हैं।

2. अनुक्रिया **(Responding) :** जिसमें व्यक्ति एक खास तरह की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है, सक्रिय ढंग से रूचि व्यक्त करता है तथा अनुक्रिया उत्पन्न करने की स्वीकृति, तत्परता एवं संतुष्टि प्रदान करता है।

3. आंकलन **(Valuing) :** जिसके व्यक्ति किसी मूल्य के लिए स्वीकृति, लगाव एवं प्रतिबद्धता या अपनत्व का भाव प्रकट करता है।

4. संगठन **(Organizing) :** जिसमें कई मूल्यों के योग से व्यक्ति एक मूल्य प्राणी को धारण कर उसे अपने व्यवहार में गठित कर लेता है।

5. चरित्र निरूपण **(Characterization) :** जिसमें व्यक्ति किसी मूल्य प्रणाली को स्वीकृती देता है और उनका सामान्य रूप में गठन करते हुए आत्मसात कर लेता है।

क्रियात्मक अनुक्षेत्र के उद्देश्य (Objectives in Psychomotor Domain) : क्रियात्मक अनुक्षेत्र के उद्देश्य प्रयोग तथा विकास से सम्बन्धित हैं। इसे पाँच भागों में बांटा गया है :–

- 1. प्रत्यक्षीकरण **(Perception) :** जिसमें व्यक्ति पूरी परिस्थिति को समझ कर क्रिया उत्पन्न करता है।
- 2. तत्परता **(Set) :** जिसमें व्यक्ति प्रारम्भिक समंजन **(Preparatory Adjustment)** करता है।
- 3. निर्देशित अनुक्रिया **(Guided Response) :** जिसमें व्यक्ति किसी के निर्देशन में बाह्य रूप से क्रिया उत्पन्न कर लेता है।
- 4. रचना तंत्र **(Mechanism) :** जिसमें व्यक्ति विश्वास पूर्वक स्वयं क्रिया उत्पन्न कर लेता है।
- 5. जटिल बाह्य अनुक्रिया **(Complex Overt Response) :** जिसमें व्यक्ति अपेक्षित गति के साथ क्रिया उत्पन्न कर लेता है।

शिक्षा अधिगम की व्यवस्था को विकसित तथा संगठित करने में उक्त तीनों क्षेत्रों (ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक) से सम्बन्धित व्यवहारपरक उद्देश्यों को लिखना आवश्यक होता है। व्यवहारपरक उद्देश्यों में अधिगम व्यवहार उसके लिए आवश्यक दशाओं तथा मान्य कसौटियों का विवरण दिया जाता है इसलिए शिक्षण परिस्थितियों को उत्पन्न करने तथा उनकी प्रभाविता का मूल्यांकन करने की दृष्टि से इस प्रकार के उद्देश्यों का प्रतिपादन अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है।

विद्यालयी स्तर पर नागरिक शास्त्र शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- 1. नागरिक गुणों के विकास के लिए व्यवहारिकता पर बल देना।
- 2. स्थानीय शासन से परिचित कराना।
- 3. शासन के स्वरूप से अवगत कराना।
- 4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण के निर्माण के लिए कार्य करना।
- 5. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना।
- 6. देश की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक समस्याओं की जानकारी प्रदान करना।
- 7. छात्रों में सामाजिक शक्तियों का विकास करना।
- 8. चारित्रिक गुणों एवं अनुशासित जीवन के अंगों को दृढ़ बनाना।
- 9. राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्याओं से अवगत कराना।
- 10. छात्रों को आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से परिचित कराना।

THANK YOU